DOI: 10.51220/hjssh.v7i1.6

Himalayan J. Soc.Sci. & Humanities Vol- 7 pp.39 - 42, December, 2012, ISSN. 0975 - 9891

नागार्जुन: जीवन संघर्ष की पर्याय औपन्यासिक कृतियाँ

गुड्डी बिष्ट

हिन्दी विभाग,

हे0न0ब0 गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर (केन्द्रीय विश्वविद्यालय), पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

Received: 22-11-2012 **Revised: 29-11-2012** **Accepted: 02-12-2012**

ABSTRACT

स्वतंत्रता के बाद के लेखकों में नागार्जुन प्रथम पंक्ति के कवि लेखक हैं। नागार्जुन ने अपनी यथार्थ लेखनी के माध्यम से कविता हो या उपन्यास जगत् सभी में आम आदमी की पीड़ा, उसके दु:ख-दर्द एवं करुण क्रन्दन को समाज के सम्मुख बेखौफ़ होकर रखा है। उपेक्षित एवं शोषित वर्ग का दु:ख-दर्द उनके स्वयं के जीवन का पर्याय बन गया। बाबा नागार्जुन एक सच्चे साहित्यकार के रूप में जन मानस के अत्यधिक निकट रहे हैं। आम समाज उन्हें यकायक नहीं मिला, बल्कि जीवन के विभिन्न पड़ावों और गलियारों में अपने पगों पर छाले ढोकर ही उन्हें इस समाज (निम्न वर्गीय समाज) से सच्चा साक्षात्कार हुआ और इसी संघर्ष के फलस्वरूप आप सच्चे साहित्यकार की भूमिका निभाने में सफल रहे हैं।

KEY-WORDS:-नागार्जुन, साहित्य, औपन्यासिक जगत्, सच्चा साहित्यकार, यथार्थता, निम्नवर्गीय समाज, जीवन संघर्ष।

निज जीवन के संघर्षों एवं सामाजिक जीवन को एक दूसरे का पर्याय मानने वाले बाबा नागार्जुन काव्य जगत में ही नहीं, बल्कि अपनी औपन्यासिक कृतियों में भी चिरस्मरणीय रहेंगे, क्योंकि समाज में प्रत्येक प्राणी का दर्द स्वयं नागार्जुन का दर्द बनकर उनके लेखन में उभरा है। आपका औपन्यासिक रचना संसार 'रतिनाथ की चाची' से लेकर 'अभिनन्दन' तक जीवन एवं जगत् के यथार्थ का एक प्रामाणिक दस्तावेज है, जो समाज एवं जीवन की बारीक से बारीक परिस्थितियों को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। बाबा की प्रत्येक रचना समाज एवं जीवन संघर्षों की प्रतिकृति तो है ही, किन्तु उनकी निम्न से निम्नतर वर्ग के प्रति सहानुभूति विरले रचनाकारों में एक है। इन्हीं सब विशेषताओं को देखकर डॉ0 रामवीर सिंह लिखते हैं कि-''नागार्जुन के साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता उनके यथार्थपरक दृष्टिकोण की है। कबीर और निराला के बाद वे हिन्दी साहित्य के अकेले रचनाकार है, जिन्होंने बड़ी दबंगता से बिना घुमाये फिराये साहित्य के चौराहे पर खड़े होकर अनियमितताओं, असमानताओं और विसंगतियों पर प्रहार किया है, उन्हें कुरेद-कुरेद कर ढूंढा है। गांव के गली-गलियारों से लेकर शहर की गगनचुम्बी इमारतों और उनके पीछे पलने वाली गन्दे नालों पर बसी झुग्गी वाली जिन्दगी को नागार्जुन ने पैदल चलकर स्वयं देखा है। इसी 'देखने' के आधार पर ही उनका अन्दाजे बयां इतना तीखा और धारदार हो सका है। बचपन से यथार्थ की तलाश में घर का परित्याग, वास्तविकता के लिए अपने और पराए की जांच नागार्जुन ने बड़ी गम्भीरता से की है[1]।

©SHARAD

नागार्जुन की उपन्यास यात्रा 1948 (रतिनाथ की चाची) से लेकर 1979 ('अभिनन्दन' हीकर जयन्ती का अभिनव संस्करण) तक है। उनके हिन्दी में ग्यारह उपन्यास हैं। इन समूची उपन्यास यात्रा में उनकी अपनी सहानुभूति दबे, पिसे, शोषित, कर्ज और गुलामी में डूबे सामान्य से सामान्य पात्रों के साथ रही है और उनके उपन्यासों के मुख्य नायक के रूप में इन्हीं वर्गों के पात्रों का चयन हुआ है। नागार्जुन तब तिलमिला उठते हैं, जब कभी उनके इन लड़ैत और कुनवैती पात्रों पर अत्याचार होने लगता है और यही नहीं, अपनी साधारण और सरल शैली के माध्यम से अपने पात्रों की कहानी को ऐसा बना देते हैं कि पाठक पात्र का अपना बनाता चला जाता है। उनकी औपन्यासिक कृतियों में देखा गया है कि वे कर्ज और गुलामी से परेशान मजदूर गरीब जनता के दुख दर्द को बड़ी गहराई और गम्भीरता से लेते हैं। उन्हें ज्ञात है कि गरीब और मजदूर की अस्मिता उसके खाली पेट से जुड़ी हुई है उसे भरने के लिए वह कितनी चक्कियों में पिसता है, कितने कष्ट और दबाव सहता है। यह उनके उपन्यासों के पात्रों में साफ झलकता है। पेट की रिक्तता उसके जीवन के अन्त तक उसे समझौतों से तोड़ती चलती है। ''नागार्जुन का समूचा उपन्यास जगत् गरीबी और निरीह जनता के ऊपर होने वाले शोषण का जगत है, उन्होंने अपने लेखन में अपने निजी अनुभव के आधार पर समाज की विसंगतियों का चित्रण किया है। अपने उपन्यासों में इन्होंने किसी भी अपरिचित और कल्पित पात्र को भी स्थान नहीं दिया और न ही उन्होंने कथानक में कल्पना के पंख फैलाकर अन्य लेखकों की भांति उड़ान भरने की कोशिश की है''[12]। उनके कथा साहित्य का एक अनोखा अन्दाज है। डॉ0 प्रकाशचन्द्र भट लिखते हैं कि-''नागार्जुन ने अपने कथा साहित्य में जिस समाज का चित्रण किया है, वह उनको देखा भाला है। उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों का चित्रण किया है। गरीब चरवाहे से लेकर थैली भेंट लेने वाले मंत्रिगण और पानी छूने से लेकर 'सहस्र शीर्षमंत्र' के पाठ तक सबके वर्णन उनके कथा साहित्य में सुलभ हैं''[13]।

नागार्जुन का लगाव अपने प्रारम्भिक जीवन से ही निम्न और उपेक्षित वर्ग से रहा है। यही कारण है कि उनकी रचना में निम्न वर्ग के लोग ही नायकत्व की भूमिका निभाते है। स्वयं उच्चवर्गीय ब्राह्मण होते हुए भी उन्होंने कहीं भी ब्राह्मणवाद का आरोपण नहीं किया है। उल्टे इस वर्ग के अन्दर पलने और पनपने वाले ढोंग, आडम्बर और इसकी पोपलीला को व्यंग्यों के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। नागार्जुन इस क्षेत्र में अकेले व्यक्ति हैं, जिन्होंने इस परम्परा और रूढ़िवादी समाज पर खड़े होकर चोट की है। परन्तु यह नागार्जुन का दुराग्रह नहीं है, उन्हें गरीबी, शोषित ब्राह्मण और ब्राह्मणियों से बेहद सहानुभूति है-'बलचनमा' की मिसर की विधवा, रतिनाथ की चाची की गौरी आदि पात्र ऐसे ही हैं। नागार्जुन ने सदियों से शोषित, उपेक्षित और वंचित निम्न वर्ग को स्वाभिमान और बेहतर जीवन का रास्ता दिखाया है और इस वर्ग के जीवन में वे जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त गम्भीरता से निरूपित हुए हैं। नागार्जुन ने किसानों और मजदूरों के शोषण को मुक्त कराने के लिए जमींदारों और पूंजीपतियों से संघर्ष छेड़ा है। जमींदार द्वारा किए जाने वाले अत्याचार दमन और शोषण की ऐतिहासिक परम्परा को उन्होंने बड़ी खूबी से दिखाते हुए उसकी 'अति' पर चोट की है। नागार्जुन का काव्य हो या गद्य दोनों में आपका राजनीतिक संघर्ष विरला है। नागार्जुन अकेले ऐसे रचनाधर्मी लेखक एवं कवि हैं,

जो बेवाक होकर समाज की विद्रूपताओं को सियासी गलियारों के राजशाही हुकुमतकर्ताओं तक बेहिचक एवं कठोर स्वर में व्यक्त करते हैं।

नारी जीवन के हिमायती नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में नारी को विशेष स्थान दिया है। आप नारी के अत्यधिक हिमायती हैं, यही कारण है कि एक नारी के जीवन में जितना विषम सा-विषम संघर्ष आता है, वह आपसे अछूता नहीं है। नारी जीवन में अनमेल विवाह के कारण घटने वाली घटनाओं की विसंगतियों को आधुनिक शिक्षा के आलोक में व्याख्यायित कर उनका क्रान्तिकारी हल प्रस्तुत किया है। ''नारी जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप' वैधव्य' होता है, जिसके बड़े असंगत परिणाम सामने आते हैं। नारी पुरुष के अभाव में निराश्रित होकर मनचाहे और अनदेखे लोगों का शिकार होती है, उसे पेट भरने के लिए कितने ही कुत्सित रास्तों पर समझौतों और समर्पणों से गुजरना पड़ता है, नागार्जुन ने इसे 'रतिनाथ की चाची' नई पौध 'कुंभीपाक' और 'जमनिया का बाबा' में बड़े मार्मिक ढंग से उजागर किया है''[4]। वे 'रतिनाथ की चाची' में विधवा गौरी पर होने वाले सामाजिक अपमान और असहाय समर्पण से तिलमिलाकर 'नए समाज' नई पीढ़ी और नई चेतना को जन्म देते हैं, और अनमेल विवाह को तोड़कर अन्तर्जातीय विवाह, विधवा विवाह, और यहाँ तक कि गर्भवती विधवा के विवाह को मान्यता देकर इस समस्या का क्रान्तिकारी हल प्रस्तुत करते हैं। सबसे बड़ी और क्रान्तिकारी चेतना नागार्जुन की यह रही कि उन्होंने विधवा समस्या का हल दकियानूसी समाज पर न छोड़कर नई पीढ़ी के चेतना सम्पन्न युवावर्ग पर छोड़ा है, जो कि तमाम थोड़ी मान्यताओं पर प्रहार कर एक नये भारत के नये समाज की अभूतपूर्व रचना की बुनियाद डालते हैं। नागार्जुन ने विधवा समस्या का हल उसके पुनर्विवाह में ही माना है।

डॉ0 रामवीर के शब्दों में कहा जा सकता है कि-''स्वातंत्र्योत्तर भारत के गांवों की बोली बनी पहनावा-उढ़ावा, भूखे और नंगे लोगों, पैसे के पीछे मरते और भागते बेइमानों, साँप की तरह केंचुली बदलते महानुभवों, देशप्रेम का ढोंग करने वाले आदमी की शक्ल में भेड़ियों, धर्म की आड़ में काम पिपासा शान्त करने वाले पाखण्डियों-चुगलखोरों, अधिकारों के लिए लड़ने मरने वाले किसानों, मजदूरों, समाज से टक्कर लेती विधवाओं, जर्जर होती सामाजिक मर्यादाओं को तोड़ते हुए नौजवानों, जमींदारों के शोषण से निरीह किसानों की पहली बार रंगीन तस्वीर नागार्जुन ने अपने उपन्यासों में उतारी है, साहित्य को यह उनकी अनुपम भेंट है। यह भेंट वैचारिक धरातल को सजाने के लिए नहीं, बल्कि उसे चौकाने के लिए है, जिसे हर बार देखकर नवीन वैचारिक उन्मेष होता है, समाज में कुछ करने की प्रेरणा मिलती है। नागार्जुन ने अपनी इस तस्वीर को मिथिला और बिहार के अंचलो में रंगा जरूर है, परन्तु तमाम रंग राष्ट्रीय रंग है। भारत का समूचा मानचित्र देहाती तस्वीर से स्पष्ट झलकता है''[5]।

अन्त में कहा जा सकता है कि समाज में विभिन्न वर्गों के जीवन संघर्षों एवं वर्गीय समस्याओं, जीवन का सूक्ष्मातिसूक्ष्म दर्द, नारी जीवन की संघर्ष भरी दास्तान, शोषक वर्ग के प्रति आक्रोश, दीन-हीन का दुःख दर्द, गली कूचों में रहने वाले समाज का प्रतिनिधि बनकर लेखन, अत्याचार और अन्याय के खिलाफ आवाज,

काल्पनिक पात्र न होकर यथार्थ पात्र, आँखों देखा चित्रण, प्रत्येक उपन्यास में ज्वलन्त समस्या को उजागर करना आदि नागार्जुन की अपनी अलग विशेषता है। इसी कारण नागार्जुन अकेले ऐसे उपन्यासकार हैं, जिनके मन में दलित और शोषित के प्रति जितनी दया और करुणा जागृत हुई, शोषक और अत्याचारी के प्रति उतनी ही घृणा और व्यंग्य ने जन्म लिया। परिणाम स्वरूप यह घृणा उनकी रचनाओं में बड़ी दृढ़ता के साथ उजागर हुई है, जिसका ज्वलन्त उदाहरण नागार्जुन का समूचा उपन्यास जगत् है।

सन्दभ

1.नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष-डॉ0 रामवीर सिंह, भूमिका भाग।
2.नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष-डॉ0 रामवीर सिंह, पृ0-66।
3.नागार्जुन जीवन और साहित्य-डॉ0 प्रकाश चन्द्र भट्ट, 1974, पृ0-24।
4.नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष-डॉ0 रामवीर सिंह-भूमिका भाग।
5.नागार्जुन के उपन्यासों में सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष-डॉ0 रामवीर सिंह।